B.A.II, Paper-IV
Status of Gestalt Psychology
By - BAKHTEYAR FATMI
For Patliputra university

(1)

Ques:- Discuss the present status of Gestalt Psychology.
गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के वर्तमान स्थिति का वर्णन करें।

Ans:- मनोविज्ञान के इतिहास में 1912 का वर्ष स्मरणीय बन गया है। सभी देशों में, जहाँ मनोविज्ञान फल-फूल रहा था, मनोवैज्ञानिक अध्ययन सामग्री को व्यवस्थित करने की जरूरत दीख पड़ी थी। परिणामस्वरूप पुराने सम्प्रदायों की इमारत की तोड़-फोड़ और नयों की स्थापना करने में अधिकतर मनोवैज्ञानिक कार्यरत थे।

1912 में जर्मनी के तीन युवा मनोवैज्ञानिकों ने गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की स्थापना की। ये विद्वान हैं — Wertheimer, Kohler एवं Koffka। यद्यपि वर्दीमर का कार्य इन दोनों की अपेक्षा कम है किन्तु उन्हें ही गेस्टाल्ट सम्प्रदाय का जनक माना जाता है। उनके द्वारा किया गया "Phi-phenomena" प्रयोग काफी लोकप्रिय है। लगभग 1930 में गेस्टाल्ट सम्प्रदाय अपनी उन्नति की ओर तीव्रगति से बढ़ रहा था। अमेरिका के मनोवैज्ञानिकों को व्यवहारवाद ने संरचनावाद और प्रतिक्रियावाद से विमुख होकर ही किया था जिस कारण बहुत से मनोविज्ञानी अनिश्चितता की स्थिति में थे। इसमें से कुछ गेस्टाल्ट सम्प्रदाय के अध्ययन की ओर झुककर उसके प्रसार में लग गये।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान से पूर्व का मनोविज्ञान विश्लेषण विधि को प्रमुख मानता था। संरचनावादी मानसिक तत्वों के अध्ययन में विश्वास करते थे और व्यवहारवादी उद्दीपक-अनुक्रिया को मनोविज्ञान के अध्ययन की एकमात्र प्रणाली मानते थे। इन सभी विचारधाराओं को पीछे छोड़ गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने समग्रता और अखण्डता की बात कही। इनके सिद्धान्त में मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन हेतु वातावरण का अध्ययन भी आवश्यक बताया गया। वातावरण के अध्ययन से वस्तुस्थिति की समग्रता का पता चलता है। वस्तुस्थिति की समग्रता में मानसिक क्रियाएं जब घटित होती हैं तो आकार की अनुभूति होती है तथा विचारों का उत्पादन होता है। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान में घटना क्रिया (Phenomena) को विशेष महत्व दिया गया है। घटना क्रिया एक ऐसी विधि है जिसके माध्यम से अनुभव के स्वरूप का ज्ञान होता है। घटना क्रिया के अध्ययन का

Scanned with CamScanner

सबसे अधिक उपयोग निकट और पृष्ठभूमि के संदर्भ में किया जाता है।

सीखने की सम्पूर्ण प्रक्रिया को 'सूझ' से समझाने की चेष्टा की गयी है। सूझ की विचारधारा या व्याख्या के सीखने में उपयोग किया गया है। बाल मनोविज्ञान और समाज मनोविज्ञान की व्याख्या करने में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने नई दिशा दी है। Lewin ने गेस्टाल्ट सिद्धान्त से प्रभावित होकर क्षेत्र सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जो बाल मनोविज्ञान तथा समाज मनोवि० के लिए एक उपलब्धि है।

गेस्टाल्टवाद के रूप हमेशा बदलते रहे हैं और आज इसका वर्तमान रूप प्रारम्भिक रूप से बहुत भिन्न हो चुका है। Tolman और Lashley को भी गेस्टाल्टवादियों की श्रेणी में रखा जाने लगा है। Lewin ने गेस्टाल्टवाद की सीमाओं में रहकर मनोविज्ञान को नए ढंग से समृद्ध किया फिर भी गेस्टाल्ट मनोविज्ञान आलोचकों की नजर से बच नहीं पाया। कुछ प्रमुख आलोचनाएं निम्न हैं :—

1. गेस्टाल्टवाद पर पहला आरोप यह लगा कि इसने अपने संप्रत्ययों (concepts) को अस्पष्ट छोड़ दिया है। जैसे संगठन (organization) जो गेस्टाल्टवाद की रीढ़ है, स्वयं स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं है।
2. गेस्टाल्टवाद ने दूसरे संप्रदायों और सिद्धान्तों की प्रबल आलोचना ही की है, उनकी जगह कोई सफल और दोषमुक्त सिद्धान्त नहीं दिया है।
3. गेस्टाल्टवाद ने चूंकि यंत्रवादी दृष्टिकोण को पूर्ण रूप से नहीं स्वीकारा है इसलिए यह व्याख्यावाद का एक रूप है, विज्ञान नहीं।
4. गेस्टाल्टवादियों ने क्षेत्र (field) के सम्प्रत्यय का अधिक उपयोग किया है जो उन्होंने भौतिकी से ग्रहण किया है। आलोचकों ने पूछा है कि क्या गेस्टाल्टवाद का क्षेत्र वही है जो भौतिकी में है।
5. गेस्टाल्टवाद की शरीर क्रिया पर भी आपत्तियाँ लगाई गयीं। समरूपता के नियम (isomorphism) पर बड़े विवाद हुए। गेस्टाल्टवादियों ने स्वीकार कर लिया कि उनकी शारीरक्रिया अनुमान मात्र है।
6. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने गुणात्मक प्रदत्त को स्वीकारा है। प्रदत्त को मात्रात्मक रूप देने का प्रयास नहीं किया है। इसके प्रयोग सुनिश्चित नहीं हैं और प्रयोगों पर इसका बहुत ध्यान भी नहीं है।

7. गेस्टाल्टवाद ने पूर्व अनुभवों (past experiences) की मान्यता न देकर एक बड़ी भूल की है।

गेस्टाल्टवाद के योगदानों एवं आलोचनाओं को ध्यान में रखकर इसकी वर्तमान स्थिति (Present status) पर प्रकाश डालना कठिन है। 1950 के समय तक गेस्टाल्टवाद का बोलबाला रहा। लेकिन बाद चलकर इसके प्रभाव में कमी आई। गेस्टाल्टवाद का मनोविज्ञान पर काफी प्रभाव पड़ा। 1960 के समय में सीखने के क्षेत्र में प्रभाव देखा गया। Asch (ऐश) एवं सहयोगियों द्वारा किए गए प्रयोगों अध्ययनों से प्रमाणित किया गया कि किस प्रकार प्रत्यक्षणात्मक संगठन द्वारा स्मृति की तत्वों की संगठनता (coherence) प्रभावित होती है। वास्तव में आज संगठनात्मक विचारधारा गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के अवधारणाओं पर ही आधारित है। सीखने तथा स्मृति में प्रत्यक्षात्मक कारकों का उपयोग आज भी हो रहा है। चिंतन तथा समस्या समाधान के बारे में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के विचारधारा को आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञानियों द्वारा उपयोग में लाया गया है। गेस्टाल्टवादियों का समग्रता-अंश मनोविज्ञान (whole-part-Psychology) ने विभिन्न प्रकार की जटिलताओं के कारण विज्ञानियों की अभिरुचि को बनाए रखा है। इन जटिलताओं का समाधान ढूंढने हेतु आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञानी प्रविधि की तलाश कर रहे हैं। यद्यपि गेस्टाल्टवादियों द्वारा किए गए प्रयोगों से उनके सम्प्रदाय को बहुत अधिक लोकप्रियता प्राप्त नहीं हुई लेकिन गेस्टाल्टवाद द्वारा दिए गए बलों से सांख्यिकवादी तथा विश्लेषणात्मक सम्प्रदायों का पुनर्परीक्षण (reexamination) के द्वार अवश्य खुले।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में काफी योगदान दिया। आज भी इसके संप्रत्ययों का उपयोग प्रत्यक्षीकरण, सीखना (अधिगम), स्मृति एवं चिन्तन में धड़ल्ले से हो रहा है। आधुनिक समय में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (cognitive Psychology) में मनोवैज्ञानिक जो रुचि दिखा रहे हैं, वह गेस्टाल्टवादियों का ही प्रभाव माना जा रहा है। यदि हम गेस्टाल्टवादियों को संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का बौद्धिक पितामह (Intellectual forefather) कहें तो कहना गलत नहीं होगा। आज भी

मनोविज्ञान की जितनी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं उनमें गेस्टाल्ट दृष्टिकोण को पूर्ण स्थान प्राप्त है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि गेस्टाल्टवाद अभी भी एक यथार्थ सिद्धान्त है और अभी इसका अस्तित्व बचा हुआ है। आज कोई भी मनोविज्ञानी अपने को व्यवहारवादी नहीं कहता लेकिन गेस्टाल्टवाद के साथ अभी तक ऐसी स्थिति नहीं है। अंत में SCHULTZ (शुल्ज) के शब्दों में निष्कर्षत: कह सकते हैं कि — "Gestalt Psychology remains a separate entity in that its major tenets have not been fully absorbed into the main stream of Psychological thought."

(गेस्टाल्टवाद अपना अलग अस्तित्व बनाए हुए है क्योंकि इसकी मुख्य बातें मनोवैज्ञानिक चिन्तन की मुख्यधारा में अभी तक पूरी तरह समेटी नहीं गयी हैं)"।

=×=

10/5/2020